Geography Part – II By :- Abhishek Kumar

R. N. College Hajipur

06/07/2020

भारत की कृषि

Ⓐ परिचय

Ⓑ भारतीय कृषि की विशेषताएँ और समस्याएँ

Ⓒ भारत में हरित क्रांति

Ⓓ कृषि व्यवसाय

Ⓔ भारतीय कृषि : चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

Ⓕ समीक्षा

Ⓐ परिचय :-

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात यूरोपीय देशों से लेकर रूसी देश मित्र थे या दुश्मन राष्ट्र सभी अपने देश की अर्थव्यवस्था को बढ़ाने हेतु जिस प्रकार से कृषि क्षेत्र के अथक प्रयास किये वो प्रशंसनीय है। इन देशों के उस वक्त कृषि के साथ-साथ अन्य उद्योग भी थे परंतु भारत जैसा देश जिसकी अर्थव्यवस्था केवल कृषि पर आधारित थी और उस वक्त अपना योगदान 52.5% के लगभग थी। परंतु आज के परिदृश्य को देखने से पता चलता ही है कि कृषि की स्थिति पहले की तुलना बहुत नीचे स्तर पर हो चुकी है जिसके जिम्मेवार बदलते परिवेश से लेकर भौतिक एवं राजनीतिक कारणों को ठहराया जा सकता है। सरकार के द्वारा हर संभव उपाय एवं पंचवर्षीय योजना में टेक्नोलॉजी से लेकर कृषि भूमि तक एवं अत्याधुनिक कृषि यंत्रों के सब्सिडी तक का ध्यान में रखा बताया जाता है। भारत में कृषि उपयोग उच्च भौगोलिक क्षेत्र का 93% कृषि उपयोग के आंकड़े उपलब्ध हैं।

भारतीय कृषि की विशेषताएँ एवं समस्याएँ

भारतीय लोगों का संपूर्ण जीवन कृषि से प्रत्यक्ष रूप से नियंत्रित होता है। यहाँ की कृषि की अपनी एक अलग पहचान है लोगों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, राष्ट्रीय राजनीति भी इसी पर निर्भर है। इसकी कुछ विशेषताएँ एवं समस्या निम्नवत् है —

→ यहाँ की कृषि जीवन निर्वाह प्रकृति की है जिससे किसान अनाज का उत्पादन स्वयं परिवार के लिए करता है।

→ भारत में कृषि पर जनसंख्या का दबाव अत्यधिक है। 60% लोग प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है

→ भारत के सकल कृषित क्षेत्रों में खरीफ (ग्रीष्म) एवं रबी (शीत) दोनों खाद्यानों की बहुलता है।

→ देश के जहाँ भी वर्षा सिंचित क्षेत्र है वहाँ मिश्रित खेती होती। खेती अच्छी होने की आशा होती है साथ-ही-साथ यह जीवन निर्वाह खेती इसकी विशेषता है।

→ इस देश में प्रतिवेदित क्षेत्र में कृषि का उच्च प्रतिशत है जो अन्य देश जैसे कनाडा, चीन, जापान से कम है।

→ खेतों में जोत का आकार छोटा और विखंडित है साथ ही साथ पारंपरिक तकनीक, वर्षा आधारित कृषि, फलीदार एवं चारा फसलों की कम हिस्सेदारी ये सब विशेषताएँ होने के साथ-साथ एक प्रकार की जटिल समस्याएँ भी है।